Pew Research Center

विश्व के धर्मों का भविष्य: जनसंख्या वृद्धि अनुमान, 2020 - 2070

क्यों मुस्लिम जल्द ही विश्व का सबसे बड़ा धार्मिक समूह बन जाएंगे और ईसाई दूसरा सबसे बड़ा समूह होगा

वाशिंगटन, डीसी (18 नवंबर, 2026) – प्यू रिसर्च सेंटर डेमोग्राफ़िक स्टडी के एक नए जनसांख्यिकीय अध्ययन के अनुसार, वर्ष 2035 तक मुस्लिमों की संख्या ईसाइयों से अधिक होने का अनुमान है, जिससे वे दुनिया का सबसे बड़ा धार्मिक समूह बन जाएंगे। इस अध्ययन में यह विश्लेषण किया गया है कि यदि हाल के रुझान जारी रहते हैं, तो वर्ष 2020 से 2070 के बीच सात प्रमुख धार्मिक समूहों की आबादी में किस प्रकार बदलाव आएगा।

क्या आप किसी खास धार्मिक समूह के अनुमानों में दिलचस्पी रखते है? निम्न प्रोफ़ाइल पर जाएँ:
हिंदू | **ईसाई** | **मुस्लिम** | **किसी भी धर्म को न मानने वाले लोग** | **बौद्ध** | **यहूदी** | **अन्य धर्म**

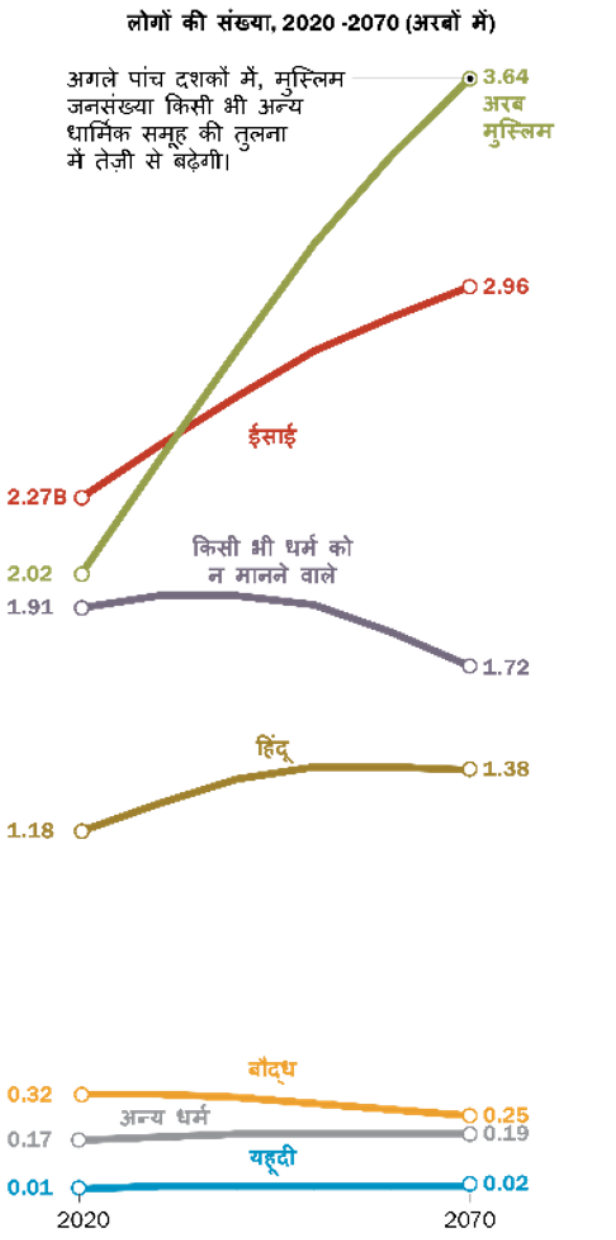
2020 और 2070 के बीच वैश्विक मुस्लिम आबादी किसी भी अन्य प्रमुख विश्व धर्म की तुलना में तेज़ी से बढ़ने का अनुमान है। ईसाई धर्म वर्तमान में दुनिया का सबसे बड़ा धार्मिक समूह है, वह उसी गति से बढ़ेगा जिस गति से विश्व की कुल आबादी बढ़ेगी। इसके परिणामस्वरूप, दुनिया की कुल आबादी में मुसलमानों की हिस्सेदारी वर्ष 2020 के 26% से बढ़कर वर्ष 2070 में 36% होने का अनुमान है, जबकि ईसाईयों हिस्सेदारी लगभग 29% पर स्थिर रहने की उम्मीद है। मुस्लिम और ईसाई जनसंख्या की वृद्धि उन देशों और क्षेत्रों में केंद्रित होगी जहाँ वर्ष 2020 में ये धार्मिक समूह पहले से ही बहुसंख्यक थे।

अगर वर्तमान रुझान जारी रहते हैं, केंद्र का अनुमान है कि 2070 तक:

- विश्व के आधे से अधिक ईसाई उप-सहारा अफ़्रीका में रहेंगे।
- एक अफ़्रीकी देश, डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ़ कांगो, सर्वाधिक ईसाई जनसंख्या होनेवाले देश के रूप में अमेरिका को पीछे छोड़ देगा।
- अमेरिका में अब ईसाई बहुसंख्य आबादी नहीं होगी, हालांकि ईसाई सबसे बड़ा अमेरिकी धार्मिक समूह बना रहेगा।
- पाकिस्तान में सबसे अधिक मुस्लिम आबादी होगी, इसके बाद भारत, नाइजीरिया और इंडोनेशिया (जिसमें वर्तमान में सबसे अधिक मुस्लिम हैं) का स्थान होगा।
- जिस देश में हिंदू पूर्ण संख्या में सबसे अधिक बढ़ेंगे वह भारत है, जो आज बहुसंख्य हिंदुओं घर है। भारत के बाहर के देशों में हिंदू आबादी तेज़ी से बढ़ने की उम्मीद है। देशांतर से अमेरिका में हिंदू जनसंख्या को बढ़ावा मिलने की उम्मीद है
- चीन, जापान और दक्षिण कोरिया की कुल आबादी सिकुड़ जाएगी, और उनकी बौद्ध आबादी आधी से अधिक घट जाएगी।
- अधिकांश देशों में अब की तुलना में किसी भी धर्म को न मानने वाले लोग अधिक होंगे। हालाँकि, इस वृद्धि की पूरी भरपाई चीन में घटती आबादी से हो जाएगी, क्योंकि वर्तमान में किसी भी धर्म को न मानने वाले लोग चीन में रहते हैं।
- सभी यहूदियों में से 62% इज़राइल में रहेंगे, जहाँ 2020 में 46% यहूदि रहते थे।

विश्व के धार्मिक समूह आबादी में अनुमानित बदलाव

बौद्ध और किसी भी धर्म को न मानने वाले लोगों को छोड़कर सभी प्रमुख धार्मिक समूहों की आबादी 2070 तक और बढ़ने की उम्मीद है



स्रोत: प्यू रिसर्च सेंटर के 2020 के अनुमान जनगणना और सर्वेक्षण के डेटा पर आधारित है।. इससे अगले वर्षों के आंकड़े जनसांख्यिकीय अनुमान हैं। अधिक जानकारी के लिए अध्ययन की कार्यप्रणाली देखें।

"विश्व के धर्मों का भविष्य: जनसंख्या वृद्धि अनुमान, 2020-2070"
प्यू रिसर्च सेंटर

डेटा एक्सप्लोरर

201 देशों और क्षेत्रों में धार्मिक परिवर्तन का अन्वेषण करें

भारत में धार्मिक परिवर्तन

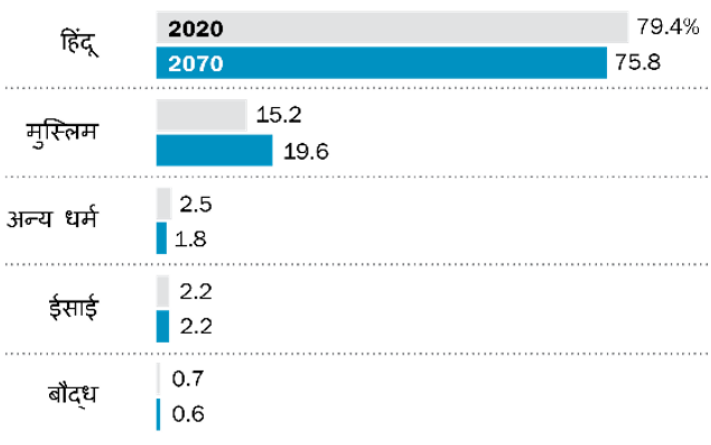
भारत की हिंदू आबादी बढ़ रही है, और आने वाले दशकों में देश में हिंदू भारी बहुमत में बने रहेंगे। लेकिन चूंकि भारत की मुस्लिम आबादी तेज़ी से बढ़ रही है, इसलिए देश की धार्मिक रूपरेखा बदलने का अनुमान है। 2020 में भारत की 79% आबादी से हिंदुओं की जनसंख्या घटकर 2070 में 76% होने की उम्मीद है, जबकि मुस्लिमों की जनसंख्या 15% से बढ़कर 20% होने का अनुमान है। यह बदलाव जनसांख्यिकीय मतभेदों के कारण है। हिंदुओं के बच्चे कम हैं और और उनकी औसत आयु भी मुस्लिमों के बच्चों की तुलना में अधिक है।

ईसाई भारत की आबादी का एक स्थिर हिस्सा बने रहेंगे, जबकि बौद्ध और "अन्य धर्म" (एक विस्तृत श्रेणी जिसमें सिख और जैन जैसे समूह शामिल हैं) के अनुयायियों की जनसंख्या के आबादी के हिस्से में थोड़ी गिरावट की उम्मीद है।

भारत विश्व की सबसे बड़ी हिंदू आबादी वाला देश बना रहेगा। इसमें 2070 में पाकिस्तान के बाद दूसरी सबसे बड़ी मुस्लिम आबादी भी होगी।

2070 तक भारत की धार्मिक संरचना कैसे बदल जाएगी

2020 और 2070 में भारत की आबादी के प्रतिशतता के रूप में धार्मिक समूह



टिप्पणी: भारत की कुल आबादी में यहूदियों और किसी भी धर्म को न मानने वाले लोगों की हिस्सेदारी 0.1% से भी कम है, इसलिए उन्हें दर्शाया नहीं गया है। अन्य धर्मों' की श्रेणी में बहाई, जैन, शिंतो, सिख, दाओवादी (जिन्हें ताओवादी भी कहा जाता है), विक्का धर्म के अनुयायी, पारसी और कई अन्य धार्मिक समूहों के अनुयायी शामिल हैं। इनमें से कुछ धार्मिक समूहों को आमतौर पर लोक या पारंपरिक धर्मों के रूप में जाना जाता है। स्रोत: प्यू रिसर्च सेंटर के 2020 के अनुमान जनगणना और सर्वेक्षण के डेटा पर आधारित है। इससे अगले वर्षों के आंकड़े जनसांख्यिकीय अनुमान हैं। अधिक जानकारी के लिए अध्ययन की कार्यप्रणाली देखें।
"विश्व के धर्मों का भविष्य: जनसंख्या वृद्धि अनुमान, 2020-2070"
प्यू रिसर्च सेंटर

प्रजनन क्षमता धार्मिक विकास का सबसे महत्वपूर्ण चालक है। प्रमुख धर्मों में नए सदस्यों के जुड़ने का सबसे बड़ा स्रोत उन धर्मों में जन्म लेने वाले बच्चे हैं, न कि वे वयस्क जो धर्म परिवर्तन के माध्यम से उनमें शामिल होते हैं। (धर्म परिवर्तन से तात्पर्य उस

धार्मिक समूह से अलग किसी अन्य धर्म को अपनाना है, जिसमें किसी व्यक्ति का पालन-पोषण हुआ हो और जिससे उसकी वयस्क होने पर धार्मिक पहचान अलग हो।) इस अध्ययन में शामिल धार्मिक समूहों में मुस्लिमों की प्रजनन क्षमता सबसे अधिक है (2020 -2025 में प्रति महिला 3.1 बच्चे) और ईसाई दूसरे स्थान पर हैं (प्रति महिला 2.5 बच्चे) है। इस बीच, मुस्लिम महिलाओं का एक बड़ा हिस्सा अपने प्रमुख प्रसव के वर्षों में प्रवेश करेगा, जो जनसंख्या वृद्धि में भी योगदान देता है। वर्ष 2020 में दुनिया भर में मुस्लिमों की औसत आयु 24 वर्ष थी, जबकि गैर-मुसलमानों की औसत आयु 33 वर्ष थी।

धार्मिक समूह दुनिया के किन क्षेत्रों में रहते हैं, यह भी बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि दुनिया के विभिन्न हिस्सों में कुल जनसंख्या वृद्धि की दर में काफी अंतर होता है। उप-सहारा अफ़्रीका में 2020 और 2070 के बीच किसी भी प्रमुख भौगोलिक क्षेत्र की सबसे तेज़ जनसंख्या वृद्धि का अनुभव होने की उम्मीद है। क्योंकि इस क्षेत्र के अधिकांश लोग ईसाई या मुस्लिम हैं, इससे दोनों समूहों की वैश्विक संख्या में काफी वृद्धि होगी।

विश्व स्तर पर मुस्लिम जनसंख्या वृद्धि पर धर्म परिवर्तन का बहुत कम प्रभाव पड़ने की अपेक्षा है। केंद्र के अनुमानों के अनुसार, वर्ष 2020 से 2070 के बीच धर्म परिवर्तन के कारण मुस्लिमों की संख्या में लगभग 80 लाख की शुद्ध कमी होगी, जबकि 'प्राकृतिक वृद्धि' (मृत्यु की तुलना में जन्म लेने वाले बच्चों की संख्या अधिक होना) के कारण उनकी आबादी में लगभग 1.6 अरब की वृद्धि होगी।

धर्म परिवर्तन दो समूहों के लिए अधिक परिणामी होने का अनुमान है: वे लोग जो किसी धर्म को नहीं मानते और वे लोग जो ईसाई धर्म के हैं। 2020 से 2070 के बीच, केंद्र का अनुमान है कि किसी भी धर्म को न मानने वाले लोगों की संख्या में वृद्धि होगी। यह वृद्धि उन लोगों की संख्या से 11.7 करोड़ अधिक होगी, जो पहले किसी भी धर्म को नहीं मानते थे, लेकिन बाद में किसी धर्म विशेष को मानने लगेंगे। जिन लोगों के बारे में यह अनुमान लगाया गया है कि वे भविष्य में किसी भी धर्म को नहीं मानेंगे, उनमें से ज़्यादातर ऐसे लोग हैं जिन्होंने पहले ईसाई धर्म को मानना छोड़ दिया है।

ये सात प्रमुख धार्मिक समूहों के लिए प्यू रिसर्च सेंटर के नवीनतम जनसंख्या वृद्धि अनुमानों के प्रमुख निष्कर्षों में से हैं। यह विश्लेषण स्त्रोतों पर निर्भर हैं, जिन में वैश्विक राष्ट्रीय जनगणना और सर्वेक्षण, संयुक्त राष्ट्र की विश्व जनसंख्या संभावनाएं और वैश्विक देशांतर प्रवाह के अनुमान शामिल है। इस अनुमान में 201 देश और क्षेत्रों को विचार में लिया गया हैं, जो सामूहिक रूप से दुनिया की 99.98% आबादी के लिए ज़िम्मेदार हैं।

ये अनुमान अगली आधी सदी में होने वाली हर चीज़ की भविष्यवाणी नहीं हैं। वे दिखाते हैं कि यदि हाल ही में देखे गए जनसांख्यिकीय पैटर्न वैसे ही रहते हैं तो क्या होगा। हालांकि, इन अनुमानों में युद्धों, प्राकृतिक आपदाओं, महामारी या आर्थिक या सामाजिक परिस्थितियों में बड़े बदलावों को शामिल नहीं किया गया है। यह मॉडल यह भी मानकर चलता है कि धर्म परिवर्तन और प्रवासन के मौजूदा रुझान भविष्य में भी जारी रहेंगे।

यह शोध प्यू - टेम्पलटन ग्लोबल रिलिजियस फ़्यूचर्स प्रोजेक्टका हिस्सा है, जो धार्मिक परिवर्तन और दुनिया भर के समाजों पर इसके प्रभाव का विश्लेषण करता है। यह दुनिया कीविश्व की हालिया धार्मिक रूपरेखाको मापने वाले केंद्र के हाल ही में प्रकाशित कार्य पर आधारित है। ग्लोबल रिलिजियस फ़्यूचर्स प्रोजेक्ट के लिए फ़ंड प्यू चैरिटेबल ट्रस्ट और जॉन टेम्पलटन फाउंडेशन से आता है।